नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक : 23-10-2019

प्रकाशनार्थ

युद्ध मानव समाज के लिए एक सबसे बड़ा अभिशाप है और युद्ध ने मानव समाज को जितनी क्षति पहुँचायी है इतनी किसी अन्य आपदा ने नहीं पहुँचायी। प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध इसका सबसे विभत्स रूप रहा। प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका को देखते हुए विश्व शांति के समर्थकों ने संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना का प्रस्ताव रखा और 24 अक्टूबर 1945 को इसकी विधिवत स्थापना की गयी। प्रारम्भ में इसके केवल 51 सदस्य राष्ट्र थे परन्तु आज इनकी संख्या 193 हो चुकी है। वर्तमान समय में विश्व के लगभग सभी राष्ट्र इसके सदस्य है।

संयुक्त राष्ट्र संघ अपने स्थापना काल से ही विश्व शांति और सुरक्षा को स्थापित करने की दिशा में प्रयासरत रहा है और अनेकों बार पूरे विश्व को भयानक युद्ध में जाने से रोका है। चाहे क्यूबा संकट हो, मध्य पूर्व का संकट हों, भारत पाकिस्तान का विवाद हो, अफ्रीकी देशों की समस्याएं हो, विश्व में स्वास्थ्य, शिक्षा, भुखमरी, बेरोजगारी आदि की समस्या हो, सभी क्षेत्रों में संयुक्त राष्ट्र संघ अपना महत्वपूर्ण योगदान देता रहा है। परन्तु आज वैश्विक परिस्थितियां बदली हैं और ऐसे में संयुक्त राष्ट्र संघ में भी व्यापक बदलाव की आवश्यकता है। विश्व की जनसंख्या में कई गुना वृद्धि हुयी है, शीत युद्ध समाप्त हो चुका है, विश्व में अनेकों नई शक्तियां उभर चुकी है, आतंकवाद, पर्यावरणीय समस्याएं, नाभिकीय हथियारों के जखीरें, नव शीतयुद्ध एवं नव उपनिवेशवाद जैसी तमाम समस्याएं विश्व के सम्मुख खड़ी है। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र संघ की संरचना और उसकी कार्य पद्धति में भारी बदलाव की आवश्यकता है। वर्तमान समय में भारत आर्थिक, राजनीतिक, सैनिक, तकनीकि आदि अनेक क्षेत्रों में अप्रतिम विकास किया है और विश्व के तमाम अग्रणी देशों की पंक्ति में खड़ा है। भारत की ये उपलब्धियां इसे विश्व के प्रभावशाली एवं जिम्मेदार देश के रूप में खड़ी की हैं जिसके कारण भारत संयुक्त राष्ट्र संघ के स्थाई सदस्य के रूप में प्रबल दावेदार है। अपनी स्वतंत्रता प्राप्ति से अब तक भारत ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के प्रति जितनी जिम्मेदारी निभाई है उसके सन्दर्भ में यदि भारत संयुक्त राष्ट्र संघ का स्थाई सदस्य बन जाता है तो यह विश्व समुदाय की सुरक्षा एवं शांति के लिए मजबूत स्तम्भ होगा।

उक्त बाते महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज, जंगल धूसड़ में रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग द्वारा **संयुक्त राष्ट्र संघ स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित विशिष्ट व्याख्यान** में मुख्य वक्ता के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय

गोरखपुर के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के शोध अध्येता **श्री रोशन कुमार** ने कही।

कार्यक्रम का संचालन रक्षा अध्ययन विभाग के प्रवक्ता श्री रमाकान्त दूबे ने की तथा आभार ज्ञापन रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अभिषेक सिंह जी ने किया। इस कार्यक्रम में रक्षा एवं स्त्राताजिक अध्ययन के स्नातक प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के सभी छात्र–छात्राओं के साथ–साथ महाविद्यालय के अन्य विद्यार्थी और शिक्षक उपस्थित रहे।

(संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस पर प्रार्थना सभा में व्याख्यान)

महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज, जंगल धूसड़ के प्रार्थना सभा में 'संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर विश्व शन्ति में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका और भारत' विषय पर व्याख्यान देते हुए राजनीतिशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ. अविनाश प्रताप सिंह ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र की स्थापना ही विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए हुयी है। सम्पूर्ण भारतीय जीवन पद्धति और दर्शन भी वसुदेव कुटुम्बकम की रही है। संयुक्त राष्ट्रसंघ को यदि विश्व में स्थायी एवं सद्भाव के वातावरण का सृजन करना है तो भारत को मुख्य भूमिका में रखना होगा। भारत क संविधान के नीति निर्देशक सिद्धांत में प्रतिज्ञान किया गया है कि भारत विश्व शान्ति को निरंतर बढ़ाने का प्रयास करता रहेगा। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र के लगभग सभी अभियानों में भारत कदम से कदम मिलाकर चलता रहा है। भारत के वीर एवं कर्त्तव्यनिष्ठ सैनिक संयुक्त राष्ट्र शन्ति रक्षक एल के सक्रिय सदस्य रहे है। विपरित परिस्थिति के वाबजूद भी भारत ने कभी भी किसी देश के उपर पहले आक्रमण नहीं किया। 191 से परमाणु शक्ति रखने और 1991 में वृहत्तर परमाणु परीक्षण के उपरान्त भी कभी इसका भय दिखाने का प्रयास नहीं किया, जबकि भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान जैसा आतंकी देश है और बार–बार धमकी के साथ भारत के सुरक्षा के और राष्ट्रीय एकता–अखण्डता को खतरा भी उत्पन्न करता रहा है। आज सम्पूर्ण विश्व आतंकवाद जैसे विनाशक वातावरण से पूर्णरूप से पीड़ित है यद्यपि भारत उसका सबसे बड़ा भुक्तभोगी है। भारत ने विगत वर्षो में संयुक्त राष्ट्र का ध्यान उसके प्रत्येक बैठक एवं सम्मेलनों में दिखाया भी है। भारत का मानना है कि जब तक आतंकवाद के समूल नाश के लिए कोई वैश्विक कार्य योजना नही बनायी जायेगी तब तक आतंकवाद से छुटकारा मिलना कठिन है।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी